पुरुषोतम मास – 17 मई 2026 से 15 जून 2026
पुरुषोत्तम मास एकादशी – 27 मई 2026
पुरुषोत्तम मास एकादशी 11 जून 2026
सोमवती आमवस्या – 15 जून 2026

नारायण दीक्षा

सृष्टि का प्रारम्भ भगवान विष्णु से हुआ, भगवान विष्णु ने सृष्टि की रचना एक संकल्प के रूप में की। चतुर्भुजधारी भगवान विष्णु के अंदर ज्योंहि सृष्टि रचना का संकल्प हुआ, त्योंही उनके नाभि कमल से चतुर्मुख श्रीब्रह्माजी का जन्म हुआ। इसके बाद श्रीब्रह्मा ने भगवान विष्णु की आज्ञानुसार प्राणियों को चार आकारों अर्थात् चार वर्गों अण्डज, जरायुज, स्वदेज एवं उद्भिज में विभाजित कर सृष्टि क्रम प्रारम्भ किया, भगवान विष्णु को नारायण भी कहा गया है।

नारायण पूर्ण पुरुष है और संसार का हर व्यक्ति ईश्वर की संतान है, मनुष्य जब जन्म लेता है तो वह विष्णु का ही एक अंश होता है क्योंकि उसका प्रधान कार्य सृष्टि में वृद्धि करना और उसको पालना है, यदि वह श्रेष्ठ पालनकर्ता है, तो वह अपने जीवन में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के लिए क्रियाशील रहते हुए पूर्ण पुरुष स्वरूप को धारण कर सकता है और नर से नारायण बन सकता है।

भगवान विष्णु नारायण अपना आदर्श शिव को मानते है, हर व्यक्ति का यही लक्ष्य रहता है कि मैं विष्णु के समान ऐश्वर्यमान, शौर्ययुक्त, कीर्तियुक्त, लक्ष्मीयुक्त बनूं इसके साथ ही जीवन में शिव के समान आनन्दयुक्त रहूं।

ब्रह्मा ने रचना तो कर दी है किन्तु यह सब पालन और संहार अर्थात् जीवन में सद्गुणों का विकास और दुर्गुणों का विनाश, यह सब शक्तियां विष्णु और शिव के अधीन है, इसलिए जीवन में पूर्ण उन्नति का मार्ग नारायण और शिव की साधना से होकर जाता है, इसलिए अनन्त चतुर्दशी और महाशिवरात्रि का विशेष विधान है।

जो व्यक्ति इन दो दिवसों में कोई संकल्प नहीं लेता, वह अपने जीवन में कुछ काल के लिए उन्नति और भोग विलास तो अवश्य प्राप्त कर लेता है किन्तु यह उसे केवल पूर्व जन्मों के शुभ कर्म के फल स्वरूप अल्प समय के लिए प्राप्त होता है, इन गुणों को स्थायी रूप से आत्मसात कर जीवन में धन, ऐश्वर्य, ज्ञान, कीर्ति इत्यादि इन छः गुणों को व्यक्ति आत्मसात कर आंतरिक आनन्द की अनुभूति प्राप्त कर सकता है और पूर्ण आनन्द की अनुभूति तो वही कर सकता है जिसमें नारायण तत्व हो अर्थात् विष्णु के समान जीवन पालन करने की क्षमता हो नारायण तत्व के द्वारा ही जीवन को पूर्ण बनाया जा सकता है, और उसके लिए हमारे ऋषियों ने एक ही विधान बताया है कि सद्गुरु से 'नारायण दीक्षा' शुभ मुर्हुत में ग्रहण की जाएं। जिसके द्वारा व्यक्ति के रोम-रोम में नारायण शक्ति स्थापित हो और वह साधारण मनुष्य के अपेक्षा श्री से युक्त हो सकें।

– नारायण दीक्षा (प्रति चरण) – न्यौ. – 3100/–